International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2017; Page No. 58-59

हिन्दी बाल काव्य में डॉ० सुरेन्द्र विक्रम का स्थान

साधना यादव
खरगजीतनगर, मैनपुरी, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

हिन्दी बाल साहित्य की शुरूआत भक्तिकाल से मानी जा सकती है। भक्तिकालीन कवि तुलसी व सूरदास द्वारा भगवान राम व कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन किया गया है उन्होंने अलग से कोई बाल साहित्य नहीं लिखा है किन्तु उनके ग्रन्थों में बाल लीला सम्बन्धी अनेक छन्द मिलते हैं जिससे बाल काव्य की परम्परा का जन्म होता है आगे के कालों में बाल साहित्य लिखा गया परन्तु इनकी स्वतंत्र लेखन की शुरूआत स्वतंत्रता पूर्व मानी जायेगी और आधुनिक काल में बाल साहित्य बहुत समृद्ध हुआ। विभिन्न बाल पत्रिकाओं द्वारा बाल साहित्य प्रकाशित किया गया जिससे प्रचुर मात्रा में बाल साहित्य उपलब्ध हुआ इस साहित्य ने परिवर्तन के कई सोपान पार किये और इसने टेक्नोलॉजी को अवरोध नहीं माना बल्कि उसे अपना सहायक बना लिया है इसमें समसामयिक विषयों को भी ध्यान में रखा जा रहा है। बालक बाल साहित्य के द्वारा शिक्षित होता है वह भी मनोरंजन के द्वारा जिससे उस पर किसी प्रकार का दबाव नहीं बनता है वर्तमान बाल साहित्यकार अपनी इस जिम्मेदारी को बखूबी निभा रहे हैं इन्हीं में से एक विरले साहित्यकार हैं डा. सुरेन्द्र विक्रम।

ये मूलतः बाल साहित्यकार हैं और बालकाव्य पर इनकी लेखनी सफलता पूर्वक चली है डा. प्रकाश मनू ने उन्हें एक बाल गोष्ठी में बाल साहित्य के विकास हेतु हर मोर्चे पर डटा रहने वाला 'हरावल दस्ते का मुखिया' कहकर सम्बोधित किया था। उनकी बाल कविताओं की विशेषता है बिम्बात्मकता।

डा.सुरेन्द्र विक्रम हिन्दी बाल साहित्य की विकसित होती हुई परम्परा के एक महत्वपूर्ण अंग है उन्होंने शिक्षा और साहित्य दोनों के लिए ही कार्य किया है। उनका काव्य बालकों के बचपन से लेकर किशोरावस्था तक के लिए लिखा गया है जो बालाकों को मनोरंजन के साथ –साथ प्रेरणा व उचित मार्गदर्शन करता है। डा. सुरेन्द्र के बाल काव्य की विशेषताऐं हैं कविता के बीच में कहानी को सहजता से शामिल कर देना व लोकतत्व व आधुनिकता का सम्मिश्रण,जो उन्हें लोकतत्व के कारण मिठास व आधुनिकता के कारण प्रासंगिक बनाती है वे बाल मनोविज्ञान के कुशल पारखी हैं ऐसा लगता है कि जैसे उन्होंने बालकों के मन का कोना – कोना झाँका हुआ है डा. सुरेन्द्र विक्रम ने जो किशारों के लिए कविताऐं लिखी हैं उसमें उन्होंने सवेगों व समस्यओं को ध्यान में रखा है वैसे भी किशोरावस्था को मनोवैज्ञानिकों ने अपनी–अपनी तरह से परिभाषित किया है जिससे पता चलता है कि किशोरावस्था बालकों व उनके परिवार के लिए कितनी संवेदनशील और महत्वपूर्ण अवस्था है बच्चों का सही मायने में इसी अवस्था में चारित्रिक निर्माण शुरू होता है जो उसके लिए जीवन भर के लिए दिशा तय कर देता है। इसीलिए डा.सुरेन्द्र विक्रम ने अपने बाल काव्य में इस बात को दृष्टि में रखा है उन्होंने बहुत ही निराली कविताऐं लिखी हैं। उनमें जो शब्द प्रयोग किये वह बहुत मन को आकर्षित करते हैं और बच्चों को खिल–खिलाने पर मजबूर कर देते हैं–

अब्बक डूबा,उब्बक डूबा,नदी नहाया हाथी
दो गज लम्बी सूड चलाकर पानी लाया हाथी
गर्मी बड़ी नहाया पोखर,तब सुस्ताया हाथी
अपक उपक कान हिलाकर,तब सुस्ताया हाथी

जब भी हम किसी साहित्यकार को पढ़ते हें तो उनके परिवेश,उद्देश्य रूचियों,अभिरूचियों सभी से परिचित होते हैं। डॉ. सुरेन्द्र विक्रम ने बाल साहित्य को ऐसे समय में चुना जब बुद्ध जीवी वर्ग इसे साहित्य की विधा मानना ही नहीं चाहते थे। किन्तु उन्होंने साहस के साथ इसे चुना व स्थापित भी किया उन्होंने बालपत्रकारिता के इतिहास का पता लगाया व ' हिन्दी बाल पत्रकारिताः उद्भव एवं विकास' पर शोधकर्म किया। प्रस्तुत कविता में उनकी प्रेम की भावना झलकती है वे बालकों को बताते हैं कि इस पावन धरती रामकृष्ण की है राम कृष्ण ने जन्म लिया है हमें उनके सद्गुणों के कारण अपनी धरती माता को श्रद्धा से शीश झुकाना चाहिए –

नभ में जिसकी गूंजे गाथा
होता जिससे ऊँचा माथा
रामकृष्ण की ऐसी धरती,
निश्चल प्रेम सभी से करती
इसकी माटी उगले सोना,
जिससे दमके सोना–सोना
इस पर बलिहारी जाते
श्रद्धा से हैं शीश झुकाते।।

बच्चों को सांस्कारित करने,उनमें मानवता का भाव भरने के लिए बाल साहित्य एक अच्छा माध्यम है। आज का बाल साहित्य समय के साथ बदलता रहा है तो इसके पीछे बालकों में आये बदलाव वजह है डॉ. सुरेन्द्र विक्रम की कविता ''मामा अपनी छुट्टी समझो'' उन्होंने बाल मन का भोलापन रूठना,मनाना दिखाया है– यह एक परम्परावादी कविता है

चलो चलो अब बहुत हो चुका
वही पुराना वादा कोरा
चन्दा मामा कहो कहाँ हैं
दूध–भात का भरा कटोरा
बचपन में जब भी रोये
दादी थी बहलाया करतीं

हाथ उठाकर आसमान में
तुमसे बात कराया करतीं।

हिन्दी बाल काव्या की लोकप्रियता सर्वसिद्ध है

इसमें नये व पुराने बाल साहित्यकार निरन्तर अपनी लेखनी चला रहे हैं व बाल काव्य को निरन्तर समृद्ध कर रहे हैं इसमें सम सामयिकता का भी ध्यान रखा रहा है। डॉ.सुरेन्द्र विक्रम का बाल काव्य इन्हीं कार्यो से आधुनिकता लिए हुए हैं। बाल साहित्यकारों की श्रृंखला डॉ.सुरेन्द्र विक्रम के बिना कभी पूरी ही नहीं हो सकती है।

डॉ. सुरेन्द्र विक्रम की कविता ''मन करता है'' है कविता आज के समय में बहुत की प्रासंगिक है क्योंकि यह बताती कि आजकल माता पिता परिवार बालक पर अपनी पसन्द थोप देते हैं खास तौर पर कैरियर बनाने में बच्चे से उसकी रूचि,रूझान के बारे में कोई नहीं पूंछता जिससे बच्चे के मन में कुण्ठा,हीन भावना,अन्यमनस्कता लापवरही व जी चुराने जैसी नकारात्मक भावनाऐं जन्म ले लेती हैं जो उसके जीवन के लिए घातक सिद्ध होती है।–

मन करता है सूरज बनकर असमान में दौड़ लगाऊँ
मन करता है चन्दा बनकर सब तारों पर अकड़ दिखाऊँ
मन करता है बाबा बनकर घर पर सब पर धौंस जमाऊँ
मन करता है बाबा बनकर मैं भी अपनी मूछ बढ़ाऊँ

आधुनिकता व लोकतत्व दोनों का निर्वहन करन वाले डॉ. विक्रम शिक्षा व साहित्य के द्वारा बालकों के नैतिक विकास के पक्षधर थे वे अपनी कविता द्वारा मनोरंजनात्मक तरीके से उनमें अनुशासन,धैर्य,सामजस्य जैसे गुणों का विकास करना जानते हैं साथ ही वे बालकों के मन की गुत्थियाँ भी सुलझाते हैं। वे इस बात को भी भली भाँति समझते और मानते हैं कि अब शिक्षा बाल केन्द्रित हो गयी है तो ऐसे मे साहित्य को भी बालकेन्द्रित होना चाहिए इसके लिए वे बालकों के ही सवादी बन जाते हैं उनके मुख से उनके ही मन की सारी बातें,समस्याऐं,रूचियो के बारे में भी बताते हैं –

ऐसा ही कुछ उनकी 'उलझन' कविता कहती है–
पापा कहते बनों डॉक्टर,माँ कहती इन्जीनियर,
भईया कहते इससे अच्छा सीखो तुम कम्प्यूटर
चाचा कहते बनो प्रोफेसर,चाची कहती अफसर
दीदी कहती आगे चलकर बनना तुम्हें कलेक्टर।।

अतः यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि डॉ. सुरेन्द्र विक्रम ने बाल काव्य की दिशा व दशा दोनों को बदलने का प्रयास किया है व बाल साहित्य को मजबूती प्रदान कर समाज को इसकी उपयोगिता समझाई। समाज को बदलने व सुधारने के लिए सर्वप्रथम शुरूआत बालकों से ही होनी चाहिए क्योंकि घर परिवार,समाज व राष्ट्र की बागडोर भविष्य में इनके ही हाथ में होगी इसके लिए साहित्य से बेहतर कोई अच्छा काम नहीं कर सकता। बाल पत्रकारिता के क्षेत्र में डॉ. विक्रम ने सराहनीय योगदान दिया है जिसके लिए बाल साहित्य सदैव उनका ऋणी रहेगा। बालक के आस–पास का जो परिवेश होता है वह अच्छा बुरा कैसा भी हो सकता है किन्तु बाल साहित्यकार बालकों को साहित्य द्वारा उचित दिशा की ओर मोड़ने का प्रयास करते हैं बाल काव्य जैसी कठिन विधा को अपानाने से डॉ.सुरेन्द्र विक्रम का कद और भी ऊँचा हो जाता है।

सन्दर्थ

1. ओमप्रकाश : डॉ.सुरेन्द्र विक्रम का बाल साहित्य
2. डॉ.सुरेन्द्र विक्रम कृतहिन्दी बाल साहित्य विविध परिदृश्य
3. डॉ. सुरेन्द्र विक्रम कृत हिन्दी बाल पत्रकारिता उद्भव और विकास
4. डॉ. स्वाती शर्मा हिन्दी बाल साहित्य डॉ. सुरेन्द्र विक्रम का योगदान